

سُورَةُ الْقَصَصِ

Surah 28 — Al-Qasas (The Stories) • Meccan • 88 Ayahs • Translation: Hindi

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ طَسَمَ

ता सीन मीम

2

تِلْكَ ءَايَاتُ الْكِتَابِ الْمُبِينِ

(ऐ रसूल) ये वाज़ेए व रौशन किताब की आयतें हैं

3

نَتْلُوا¹ عَلَيْكَ مِنْ نَبَأِ مُوسَىٰ وَفِرْعَوْنَ بِالْحَقِّ لِقَوْمٍ² يُؤْمِنُونَ

(जिसमें) हम तुम्हारे सामने मूसा और फिरऔन का वाक़िया ईमानदार लोगों के नफ़े के वास्ते ठीक ठीक बयान करते हैं

4

إِنَّ فِرْعَوْنَ عَلَا فِي الْأَرْضِ وَجَعَلَ أَهْلَهَا شِيَعًا³ يَسْتَضَعِفُ طَائِفَةً⁴ مِنْهُمْ يُذَبِّحُ
أَبْنَاءَهُمْ وَيَسْتَحْيِ⁵ نِسَاءَهُمْ⁶ إِنَّهُ⁷ كَانَ مِنَ الْمُفْسِدِينَ

बेशक फिरऔन ने (मिस्र की) सरज़मीन में बहुत सर उठाया था और उसने वहाँ के रहने वालों को कई गिरोह कर दिया था उनमें से एक गिरोह (बनी इसराइल) को आजिज़ कर रखा था कि उनके बेटों को ज़बाह करवा देता था और उनकी औरतों (बेटियों) को ज़िन्दा छोड़ देता था बेशक वह भी मुफ़सिदों में था

5

وَنُرِيدُ أَنْ نَمُنَّ عَلَى الَّذِينَ اسْتُضْعِفُوا⁸ فِي الْأَرْضِ وَنَجْعَلَهُمْ أَئِمَّةً⁹ وَنَجْعَلَهُمُ
الْوَرَثِينَ

और हम तो ये चाहते हैं कि जो लोग रूए ज़मीन में कमज़ोर कर दिए गए हैं उनपर एहसान करे और उन्हींको (लोगों का) पेशवा बनाएँ और उन्हीं को इस (सरज़मीन) का मालिक बनाएँ

6

وَنُمَكِّنَ لَهُمْ فِي الْأَرْضِ وَنُرِيَ فِرْعَوْنَ وَهَمُنَ وَجُنُودَهُمَا مِنْهُمْ مَا كَانُوا ۖ يَحْذَرُونَ

और उन्हीं को रुए ज़मीन पर पूरी कुदरत अता करे और फिरऔन और हामान और उन दोनों के लश्करो को उन्हीं कमज़ोरों के हाथ से वह चीज़ें दिखायें जिससे ये लोग डरते थे

7

وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ أُمِّ مُوسَىٰ أَنْ أَرْضِعِيهِ ۖ فَإِذَا خِفَتْ عَلَيْهِ فَأَلْقِيهِ فِي الْيَمِّ وَلَا تَخَافِي
وَلَا تَحْزَنِي ۖ إِنَّا رَأَوْنَاهُ إِلَيْكَ وَجَاعِلُوهُ مِنَ الْمُرْسَلِينَ

और हमने मूसा की माँ के पास ये वही भेजी कि तुम उसको दूध पिला लो फिर जब उसकी निस्बत तुमको कोई खौफ हो तो इसको (एक सन्दूक में रखकर) दरिया में डाल दो और (उस पर) तुम कुछ न डरना और न कुढ़ना (तुम इतमेनान रखो) हम उसको फिर तुम्हारे पास पहुँचा देंगे और उसको (अपना) रसूल बनाएँगे

8

فَأَلْتَقَطَهُ ۖ ءَالُ فِرْعَوْنَ لِيَكُونَ لَهُمْ عَدُوًّا ۖ وَحَزَنًا ۖ إِنَّ فِرْعَوْنَ وَهَمُنَ وَجُنُودَهُمَا
كَانُوا ۖ خَطِئِينَ

(गरज़ मूसा की माँ ने दरिया में डाल दिया) वह सन्दूक बहते बहते फिरऔन के महल के पास आ लगा तो फिरऔन के लोगों ने उसे उठा लिया ताकि (एक दिन यही) उनका दुश्मन और उनके राज का बायस बने इसमें शक नहीं कि फिरऔन और हामान उन दोनों के लश्कर ग़लती पर थे

9

وَقَالَتِ امْرَأَتُ فِرْعَوْنَ قُرْتُ عَيْنٍ ۖ لِّيَ وَلَكَ ۖ لَا تَقْتُلُوهُ عَسَىٰ أَنْ يَنْفَعَنَا أَوْ
نَتَّخِذَهُ ۖ وَلَدًا ۖ وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ

और (जब मूसा महल में लाए गए तो) फिरऔन की बीबी (आसिया अपने शौहर से) बोली कि ये मेरी और तुम्हारी (दोनों की) आँखों की ठन्डक है तो तुम लोग इसको क़त्ल न करो क्या अजब है कि ये हमको नफ़ा पहुँचाए या हम उसे ले पालक ही बना लें और उन्हें (उसी के हाथ से बर्बाद होने की) ख़बर न थी

10

وَأَصْبَحَ فُؤَادُ أُمِّ مُوسَىٰ فُرْعَا ۖ إِن كَادَتْ لَتُبْدَىٰ بِهِ ۖ لَوْلَا أَنْ رَّبَّنَا عَلٰى قَلْبِهَا
لِتَكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ

इधर तो ये हो रहा था और (उधर) मूसा की माँ का दिल ऐसा बेचैन हो गया कि अगर हम उसके दिल को मज़बूत कर देते तो क़रीब था कि मूसा का हाल ज़ाहिर कर देती (और हमने इसीलिए ढारस दी) ताकि वह (हमारे वायदे का) यक़ीन रखे

11

وَقَالَتْ لِأُخْتِهِ ۖ قُصِّيهِ ۖ فَبَصُرَتْ بِهِ ۖ عَنِ جُنُبٍ ۖ وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ

और मूसा की माँ ने (दरिया में डालते वक्त) उनकी बहन (कुलसूम) से कहा कि तुम इसके पीछे पीछे (अलग) चली जाओ तो वह मूसा को दूर से देखती रही और उन लोगो को उसकी खबर भी न हुई

12

ۖ وَحَرَّمْنَا عَلَيْهِ الْمَرَاضِعَ مِنْ قَبْلُ فَقَالَتْ هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَىٰ أَهْلِ بَيْتٍ ۖ يَكْفُلُونَهُ ۚ لَكُمْ وَهُمْ لَهُ ۚ نَصِحُونَ

और हमने मूसा पर पहले ही से और दाईयों (के दूध) को हराम कर दिया था (कि किसी की छाती से मुँह न लगाया) तब मूसा की बहन बोली भला मैं तुम्हें एक घराने का पता बताऊँ कि वह तुम्हारी खातिर इस बच्चे की परवरिश कर देंगे और वह यकीनन इसके खैरखाह होंगे

13

فَرَدَدْنَاهُ إِلَىٰ أُمِّهِ ۖ كَىٰ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ ۚ وَلِتَعْلَمَ أَنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ ۚ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ

गरज (इस तरीक़ से) हमने मूसा को उसकी माँ तक फिर पहुँचा दिया ताकि उसकी आँख ठन्डी हो जाए और रंज न करे और ताकि समझ ले खुदा का वायदा बिल्कुल ठीक है मगर उनमें के अक्सर नहीं जानते हैं

14

وَلَمَّا بَلَغَ أَشُدَّهُ ۖ وَأَسْتَوَىٰ ۖ آتَيْنَاهُ حُكْمًا ۖ وَعِلْمًا ۖ ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ

और जब मूसा अपनी जवानी को पहुँचे और (हाथ पाँव निकाल के) दुरुस्त हो गए तो हमने उनको हिकमत और इल्म अता किया और नेकी करने वालों को हम यूँ जज़ाएँ खैर देते हैं

وَدَخَلَ الْمَدِينَةَ عَلَى حِينٍ غَفْلَةٍ ۚ مِّنْ أَهْلِهَا فَوَجَدَ فِيهَا رَجُلَيْنِ يَقْتَتِلَانِ هَٰذَا مِنْ شِيعَتِهِ ۚ وَهَٰذَا مِنْ عَدُوِّهِ ۚ ۚ فَاسْتَغْثَهُ الَّذِي مِنْ شِيعَتِهِ ۚ عَلَى الَّذِي مِنْ عَدُوِّهِ ۚ فَوَكَزَهُ مُوسَى فَقَضَىٰ عَلَيْهِ ۚ قَالَ هَٰذَا مِنْ عَمَلِ الشَّيْطَانِ ۚ إِنَّهُ ۚ عَدُوٌّ ۚ مُّضِلٌّ ۚ مُّبِينٌ ۚ

और एक दिन इत्तिफाकन मूसा शहर में ऐसे वक्त आए कि वहाँ के लोग (नींद की) ग़फ़लत में पड़े हुए थे तो देखा कि वहाँ दो आदमी आपस में लड़े मरते हैं ये (एक) तो उनकी क्रौम (बनी इसराइल) में का है और वह (दूसरा) उनके दुश्मन की क्रौम (किब्ती) का है तो जो शख्स उनकी क्रौम का था उसने उस शख्स से जो उनके दुश्मनों में था (ग़लबा हासिल करने के लिए) मूसा से मदद माँगी ये सुनते ही मूसा ने उसे एक घूसा मारा था कि उसका काम तमाम हो गया फिर (ख़्याल करके) कहने लगे ये शैतान का काम था इसमें शक नहीं कि वह दुश्मन और खुल्लम खुल्ला गुमराह करने वाला है

قَالَ رَبِّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي فَاغْفِرْ لِي فَغَفَرَ لَهُ ۚ إِنَّهُ ۚ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ

(फिर बारगाहे खुदा में) अर्ज़ की परवरदिगार बेशक मैंने अपने ऊपर आप ज़ुल्म किया (कि इस शहर में आया) तो तू मुझे (दुश्मनों से) पोशीदा रख-गरज़ खुदा ने उन्हें पोशीदा रखा (इसमें तो शक नहीं कि वह बड़ा पोशीदा रखने वाला मेहरबान है)

قَالَ رَبِّ بِمَا أَنْعَمْتَ عَلَيَّ فَلَنْ أَكُونَ ظَهِيرًا لِّلْمُجْرِمِينَ

मूसा ने अर्ज़ की परवरदिगार चूँकि तूने मुझ पर एहसान किया है मैं भी आइन्दा गुनाहगारों का हरगिज़ मदद गार न बनूँगा

فَاصْبَحَ فِي الْمَدِينَةِ خَائِفًا ۖ يَتَرَقَّبُ فَإِذَا الَّذِي اُسْتَنْصَرَهُ ۚ بِالْأَمْسِ يَسْتَصْرِخُهُ ۚ ۚ قَالَ لَهُ ۚ مُوسَىٰ إِنَّكَ لَغَوِيٌّ ۚ مُّبِينٌ ۚ

गरज़ (रात तो जो त्यों गुज़री) सुबह को उम्मीदो बीम की हालत में मूसा शहर में गए तो क्या देखते हैं कि वही शख्स जिसने कल उनसे मदद माँगी थी उनसे (फिर) फरियाद कर रहा है-मूसा ने उससे कहा बेशक तू यक्कीनी खुल्लम खुल्ला गुमराह है

فَلَمَّا أَنْ أَرَادَ أَنْ يَبْطِشَ بِالَّذِي هُوَ عَدُوٌّ ۚ لَّهُمَا قَالَ يَمُوسَىٰ أَتُرِيدُ أَنْ تَقْتُلَنِي كَمَا قَتَلْتَ نَفْسًا ۚ بِالْأَمْسِ ۚ إِنَّ تُرِيدُ إِلَّا أَنْ تَكُونَ جَبَّارًا ۚ فِي الْأَرْضِ وَمَا تُرِيدُ أَنْ تَكُونَ مِنَ الْمُصْلِحِينَ

गरज जब मूसा ने चाहा कि उस शख्स पर जो दोनों का दुश्मन था (छुड़ाने के लिए) हाथ बढ़ाएँ तो क़िस्ती कहने लगा कि ऐ मूसा जिस तरह तुमने कल एक आदमी को मार डाला (उसी तरह) मुझे भी मार डालना चाहते हो तो तुम बस ये चाहते हो कि रुए ज़मीन में सरकश बन कर रहो और मसलह (क्रौम) बनकर रहना नहीं चाहते

وَجَاءَ رَجُلٌ ۚ مِّنْ أَقْصَا الْمَدِينَةِ يَسْعَىٰ قَالَ يَمُوسَىٰ إِنَّ الْمَلَائِكَةَ يَأْتِمِرُونَ بِكَ لِيَقْتُلُوكَ فَاخْرُجْ إِنِّي لَكَ مِنَ النَّاصِحِينَ

और एक शख्स शहर के उस किनारे से डराता हुआ आया और (मूसा से) कहने लगा मूसा (तुम ये यक़ीन जानो कि शहर के) बड़े बड़े आदमी तुम्हारे आदमी तुम्हारे बारे में मशवरा कर रहे हैं कि तुमको कत्ल कर डालें तो तुम (शहर से) निकल भागो

فَخَرَجَ مِنْهَا خَائِفًا ۚ يَتَرَقَّبُ ۚ قَالَ رَبِّ نَجِّنِي مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ

मै तुमसे खैरख्वाहाना (भलाइ के लिए) कहता हूँ गरज मूसा वहाँ से उम्मीद व बीम की हालत में निकल खड़े हुए और (बारगाहे खुदा में) अर्ज़ की परवरदिगार मुझे ज़ालिम लोगों (के हाथ) से नजात दे

وَلَمَّا تَوَجَّهَ تِلْقَاءَ مَدْيَنَ قَالَ عَسَىٰ رَبِّي أَنْ يَهْدِيَنِي سَوَاءَ السَّبِيلِ

और जब मदीयन की तरफ रुख किया (और रास्ता मालूम न था) तो आप ही आप बोले मुझे उम्मीद है कि मेरा परवरदिगार मुझे सीधे रास्ता दिखा दे

وَلَمَّا وَرَدَ مَاءَ مَدْيَنَ وَجَدَ عَلَيْهِ أُمَّةً ۖ مِّنَ النَّاسِ يَسْقُونَ وَوَجَدَ مِنْ دُونِهِمُ امْرَأَتَيْنِ تَذُودَانِ ۖ قَالَ مَا خَطْبُكُمَا ۖ قَالَتَا لَا نَسْقِي حَتَّى يُصْدِرَ الرِّعَاءُ ۖ وَأَبُونَا شَيْخٌ ۖ كَبِيرٌ ۖ

और (आठ दिन फाका करते चले) जब शहर मदीयन के कुओं पर (जो शहर के बाहर था) पहुँचे तो कुओं पर लोगों की भीड़ देखी कि वह (अपने जानवरों को) पानी पिला रहे हैं और उन सबके पीछे दो औरतो (हज़रत शुएब की बेटियों) को देखा कि वह (अपनी बकरियों को) रोके खड़ी है मूसा ने पूछा कि तुम्हारा क्या मतलब है वह बोली जब तक सब चरवाहे (अपने जानवरों को) खूब छक के पानी पिला कर फिर न जाएँ हम नहीं पिला सकते और हमारे वालिद बहुत बूढ़े हैं

فَسَقَى لَهُمَا ثُمَّ تَوَلَّى إِلَى الظِّلِّ فَقَالَ رَبِّ إِنِّي لِمَا أَنزَلْتَ إِلَيَّ مِنْ خَيْرٍ ۖ فَقِيرٌ ۖ

तब मूसा ने उन की (बकरियों) के लिए (पानी खींच कर) पिला दिया फिर वहाँ से हट कर छांव में जा बैठे तो (चूँकि बहुत भूक थी) अर्ज की परवरदिगार (उस वक्त) जो नेअमत तू मेरे पास भेज दे मै उसका सख्त हाज़त मन्द हूँ

فَجَاءَتْهُ إِحْدَاهُمَا تَمْشِي عَلَى اسْتِحْيَاءٍ ۖ قَالَتْ إِنَّ أَبِي يَدْعُوكَ لِيَجْزِيَكَ أَجْرَ مَا سَقَيْتَ لَنَا ۖ فَلَمَّا جَاءَهُ ۖ وَقَصَّ عَلَيْهِ الْقَصَصَ قَالَ لَا تَخَفْ ۖ نَجَوْتَ مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ

इतने में उन्हीं दो मे से एक औरत शर्मीली चाल से आयी (और मूसा से) कहने लगी-मेरे वालिद तुम को बुलाते हैं ताकि तुमने जो (हमारी बकरियों को) पानी पिला दिया है तुम्हें उसकी मज़दूरी दे शरज़ जब मूसा उनके पास आए और उनसे अपने किस्से बयान किए तो उन्होंने कहा अब कुछ अन्देशा न करो तुमने ज़ालिम लोगों के हाथ से नजात पायी

قَالَتْ إِحْدَاهُمَا يَأْبَتِ اسْتُجْرُهُ ۖ إِنَّ خَيْرَ مَنِ اسْتَجَرْتَ الْقَوِيُّ الْأَمِينُ

(इसी असना में) उन दोनों में से एक लड़की ने कहा ऐ अब्बा इन को नौकर रख लीजिए क्योंकि आप जिसको भी नौकर रखें सब में बेहतर वह है जो मज़बूत और अमानतदार हो

قَالَ إِنِّي أُرِيدُ أَنْ أُنكِحَكَ إِحْدَى ابْنَتَيَّ هَاتَيْنِ عَلَى أَنْ تَأْجُرَنِي ثَمْنِي حَبْجَ ۚ ۚ فَإِنْ
 أَتَمَمْتَ عَشْرًا ۖ فَمِنْ عِنْدِكَ ۚ وَمَا أُرِيدُ أَنْ أَشُقَّ عَلَيْكَ ۚ سَتَجِدُنِي إِنْ شَاءَ اللَّهُ
 مِنَ الصَّالِحِينَ

(और इनमें दोनों बातें पायी जाती हैं तब) शुएब ने कहा मैं चाहता हूँ कि अपनी दोनों लड़कियों में से एक के साथ तुम्हारा इस (महर) पर निकाह कर दूँ कि तुम आठ बरस तक मेरी नौकरी करो और अगर तुम दस बरस पूरे कर दो तो तुम्हारा एहसान और मैं तुम पर मेहनत मशक्कत भी डालना नहीं चाहता और तुम मुझे इन्शा अल्लाह नेको कार आदमी पाओगे

قَالَ ذَلِكَ بَيْنِي وَبَيْنَكَ ۚ أَيَّمَا الْأَجَلَيْنِ قَضَيْتُ فَلَا عُدُونَ عَلَيَّ ۚ وَاللَّهُ عَلَى مَا
 نَقُولُ وَكِيلٌ ۚ

मूसा ने कहा ये मेरे और आप के दरमियान (मुहाएदा) है दोनों मुद्दतों में से मैं जो भी पूरी कर दूँ (मुझे एख्तियार है) फिर मुझ पर जबर और ज्यादाती (देने का आपको हक़) नहीं और हम आप जो कुछ कर रहे हैं (उसका) खुदा गवाह है

ۚ فَلَمَّا قَضَىٰ مُوسَى الْأَجَلَ وَسَارَ بِأَهْلِهِ ۚ ۚ آنَسَ مِنْ جَانِبِ الطُّورِ نَارًا ۚ قَالَ
 لِأَهْلِهِ امْكُثُوا ۚ إِنِّي آنَسْتُ نَارًا ۚ ۚ لَعَلِّي آتِيكُم مِّنْهَا بِخَبَرٍ أَوْ جَذْوَةٍ ۚ ۚ مِنَ النَّارِ
 لَعَلَّكُمْ تَصْطَلُونَ

गरज़ मूसा का छोटी लड़की से निकाह हो गया और रहने लगे फिर जब मूसा ने अपनी (दस बरस की) मुद्दत पूरी की और बीबी को लेकर चले तो अंधेरीरात जाड़ों के दिन राह भूल गए और बीबी सफ़ूरा को दर्द ज़ेह शुरू हुआ (इतने में) कोहेतूर की तरफ़ आग दिखायी दी तो अपने लड़के बालों से कहा तुम लोग ठहरो मैंने यक़ीनन आग देखी है (मैं वहाँ जाता हूँ) क्या अजब है वहाँ से (रास्ते की) कुछ ख़बर लाऊँ या आग की कोई चिंगारी (लेता आऊँ) ताकि तुम लोग तापो

فَلَمَّا أَتَاهَا نُودِيَ مِنْ شَاطِئِ الْوَادِ الْأَيْمَنِ فِي الْبُقْعَةِ الْمُبْرَكَةِ مِنَ الشَّجَرَةِ أَنْ
 يَمُوسَىٰ إِنِّي أَنَا اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ

गरज़ जब मूसा आग के पास आए तो मैदान के दाहिने किनारे से इस मुबारक जगह में एक दरख्त से उन्हें आवाज़ आयी कि ऐ मूसा इसमें शक नहीं कि मैं ही अल्लाह सारे जहाँ का पालने वाला हूँ

وَأَنْ أَلْقِ عَصَاكَ ۚ فَلَمَّا رَءَاهَا تَهْتَزُّ كَأَنَّهَا جَانٌّ ۚ وَلَّى مُدْبِرٌ ۚ وَلَمْ يُعَقِّبْ ۚ
يُمُوسَىٰ أَقْبِلْ وَلَا تَخَفْ ۚ إِنَّكَ مِنَ الْآمِنِينَ

और यह (भी आवाज़ आयी) कि तुम अपनी छड़ी (ज़मीन पर) डाल दो फिर जब (डाल दिया तो) देखा कि वह इस तरह बल खा रही है कि गोया वह (ज़िन्दा) अजदहा है तो पीठ फेरके भागे और पीछे मुड़कर भी न देखा (तो हमने फरमाया) ऐ मूसा आगे आओ और डरो नहीं तुम पर हर तरह अमन व अमान में हो

أَسْأَلُكَ يَدَكَ فِي جَيْبِكَ تَخْرُجُ بَيْضَاءَ مِنْ غَيْرِ سُوءٍ ۚ وَأَضْمُمُ إِلَيْكَ جَنَاحَكَ مِنْ
الرَّهْبِ ۚ فَذَنِكَ بُرْهَانٍ مِنْ رَبِّكَ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا
فَاسِقِينَ

(अच्छा और लो) अपना हाथ गरेबान में डालो (और निकाल लो) तो सफेद बुराक़ होकर बेऐब निकल आया और ख़ौफ की (वजह) से अपने बाजू अपनी तरफ समेट लो (ताकि ख़ौफ जाता रहे) गरज़ ये दोनों (असा व यदे बैज़ा) तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से (तुम्हारी नुबूवत की) दो दलीलें फिरऔन और उसके दरबार के सरदारों के वास्ते हैं और इसमें शक नहीं कि वह बदकार लोग थे

قَالَ رَبِّ إِنِّي قَتَلْتُ مِنْهُمْ نَفْسًا ۚ فَأَخَافُ أَنْ يَقْتُلُونِ

मूसा ने अर्ज़ की परवरदिगार मैंने उनमें से एक शख्स को मार डाला था तो मैं डरता हूँ कहीं (उसके बदले) मुझे न मार डालें

وَأَخِي هَارُونُ هُوَ أَفْصَحُ مِنِّي لِسَانًا ۚ فَأَرْسَلْهُ مَعِيَ رِدْءًا ۚ يُصَدِّقُنِي ۚ إِنِّي أَخَافُ
أَنْ يُكَذِّبُونِ

और मेरा भाई हारुन वह मुझसे (ज़बान में ज्यादा) फ़सीह है तो तू उसे मेरे साथ मेरा मददगार बनाकर भेज कि वह मेरी तसदीक करे क्योंकि यकीनन मैं इस बात से डरता हूँ कि मुझे वह लोग झुठला देंगे (तो उनके जवाब के लिए गोयाइ की ज़रूरत है)

قَالَ سَنَشُدُّ عَضُدَكَ بِأَخِيكَ وَنَجْعَلُ لَكُمَا سُلْطٰنًا ۖ فَلَا يَصِلُونَ إِلَيْكُمَا ۚ بِأَيِّتِنَا
أَنْتُمَا وَمَنِ اتَّبَعَكُمَا الْغٰلِبُونَ

फरमाया अच्छा हम अनकरीब तुम्हारे भाई की वजह से तुम्हारे बाजू क़वी कर देंगे और तुम दोनों को ऐसा ग़लबा अता करेंगे कि फिरऔनी लोग तुम दोनों तक हमारे मौजिज़े की वजह से पहुँच भी न सकेंगे लो जाओ तुम दोनो और तुम्हारे पैरवी करने वाले ग़ालिब रहेंगे

فَلَمَّا جَاءَهُمْ مُوسَىٰ بِأَيِّتِنَا بَيِّنٰتٍ ۖ قَالُوا ۚ مَا هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ ۙ مُّفْتَرٍ ۚ وَسَمِعْنَا
بِهَٰذَا فِىٓ ءَابَآئِنَا الْأَوَّلِينَ

गरज़ जब मूसा हमारे वाजेए व रौशन मौजिज़े लेकर उनके पास आए तो वह लोग कहने लगे कि ये तो बस अपने दिल का गढ़ा हुआ जादू है और हमने तो अपने अगले बाप दादाओं (के ज़माने) में ऐसी बात सुनी भी नहीं

وَقَالَ مُوسَىٰ رَبِّىَٓ أَعْلَمُ بِمَن جَاءَ بِالْهُدٰى مِنْ عِنْدِهِ ۖ وَمَن تَكُونُ لَهُ ۖ عَقِبَةُ الدَّارِ ۚ
إِنَّهُ ۖ لَا يُفْلِحُ الظَّٰلِمُونَ

और मूसा ने कहा मेरा परवरदिगार उस शख्स से खूब वाकिफ़ है जो उसकी बारगाह से हिदायत लेकर आया है और उस शख्स से भी जिसके लिए आखिरत का घर है इसमें तो शक ही नहीं कि ज़ालिम लोग कामयाब नहीं होते

وَقَالَ فِرْعَوْنُ يَأْيُّهَا الْمَلَأُ مَا عَلِمْتُ لَكُم مِّنْ إِلٰهِ غَيْرِى فَأَوْقَدْ لِّىٓ يَهْمُنُ عَلَى الطِّينِ
فَاجْعَلْ لِّى صَرْحًا ۖ لَّعَلِّىٓ أَطَّلِعُ إِلَى إِلٰهِ مُوسَىٰ وَإِنِّى لَآظُنُّهُ ۚ مِنَ الْكٰذِبِينَ

और (ये सुनकर) फिरऔन ने कहा ऐ मेरे दरबार के सरदारों मुझ को तो अपने सिवा तुम्हारा कोई परवरदिगार मालूम नहीं होता (और मूसा दूसरे को खुदा बताता है) तो ऐ हामान (वज़ीर फिरऔन) तुम मेरे वास्ते मिट्टी (की ईंटों) का पज़ावा सुलगाओ फिर मेरे वास्ते एक पुख्ता महल तैयार कराओ ताकि मैं (उस पर चढ़ कर) मूसा के खुदा को देखू और मैं तो यक़ीनन मूसा को झूठा समझता हूँ

وَأَسْتَكْبِرَ هُوَ وَجُنُوْدُهُ ۚ فِى الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَظَنُوْا ۚ أَنَّهُمۥ إِلَيْنَا لَا يُرْجَعُونَ

और फिरऔन और उसके लश्कर ने रुए ज़मीन में नाहक़ सर उठाया था और उन लोगों ने समझ लिया था कि हमारी बारगाह में वह कभी पलट कर नहीं आएँगे

فَأَخَذْنَاهُ وَجُنُودَهُ ۖ فَنَبَذْنَاهُمْ فِي الْيَمِّ ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظَّالِمِينَ

तो हमने उसको और उसके लश्कर को ले डाला फिर उन सबको दरिया में डाल दिया तो (ऐ रसूल) ज़रा देखों तो कि ज़ालिमों का कैसा बुरा अन्जाम हुआ

وَجَعَلْنَاهُمْ أُمَّةً ۚ يَدْعُونَ إِلَى النَّارِ ۚ وَيَوْمَ الْقِيَمَةِ لَا يُنصَرُونَ

और हमने उनको (गुमराहों का) पेशवा बनाया कि (लोगों को) जहन्नुम की तरफ बुलाते हैं और क़यामत के दिन (ऐसे बेकस होंगे कि) उनको किसी तरह की मदद न दी जाएगी

وَاتَّبَعْنَاهُمْ فِي هَذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً ۚ ۚ وَيَوْمَ الْقِيَمَةِ هُمْ مِنَ الْمَقْبُوحِينَ

और हमने दुनिया में भी तो लानत उन के पीछे लगा दी है और क़यामत के दिन उनके चेहरे बिगाड़ दिए जायेंगे

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ مِنْ ۚ بَعْدَ مَا أَهْلَكْنَا الْقُرُونَ الْأُولَىٰ بِصَآئِرٍ لِلنَّاسِ وَهَدًى ۚ وَرَحْمَةً ۚ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ

और हमने बहुतेरी अगली उम्मतों को हलाक कर डाला उसके बाद मूसा को किताब (तौरैत) अता की जो लोगों के लिए अजसरतापा बसीरत और हिदायत और रहमत थी ताकि वह लोग इब्रत व नसीहत हासिल करें

وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الْغَرْبِيِّ إِذْ قَضَيْنَا إِلَىٰ مُوسَى الْأَمْرَ وَمَا كُنْتَ مِنَ الشَّاهِدِينَ

और (ऐ रसूल) जिस वक्त हमने मूसा के पास अपना हुक्म भेजा था तो तुम (तूर के) मग़रिबी जानिब मौजूद न थे और न तुम उन वाक्यात को चश्मदीद देखने वालों में से थे

وَلَكِنَّا أَنشَأْنَا قُرُونًا ۚ فَتَطَاوَلَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ ۚ وَمَا كُنْتَ ثَاوِيًا ۚ فِي أَهْلِ مَدْيَنَ تَتْلُوا ۚ عَلَيْهِمْ ءَايَاتِنَا وَلَكِنَّا كُنَّا مُرْسِلِينَ

मगर हमने (मूसा के बाद) बहुतेरी उम्मतें पैदा की फिर उन पर एक ज़माना दराज़ गुज़र गया और न तुम मदैन के लोगों में रहे थे कि उनके सामने हमारी आयते पढ़ते (और न तुम को उन के हालात मालूम होते) मगर हम तो (तुमको) पैग़म्बर बनाकर भेजने वाले थे

وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الطُّورِ إِذْ نَادَيْنَا وَلَكِنْ رَحْمَةً ۖ مِّن رَّبِّكَ لِتُنذِرَ قَوْمًا مَّا أَتَتْهُمْ
مِّنْ نَّذِيرٍ ۖ مِّن قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ

और न तुम तूर की किसी जानिब उस वक्त मौजूद थे जब हमने (मूसा को) आवाज़ दी थी (ताकि तुम देखते) मगर ये तुम्हारे परवरदिगार की मेहरबानी है ताकि तुम उन लोगों को जिनके पास तुमसे पहले कोई डराने वाला आया ही नहीं डराओ ताकि ये लोग नसीहत हासिल करें

وَلَوْلَا أَن تُصِيبَهُمْ مُّصِيبَةٌ ۖ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ فَيَقُولُوا ۖ رَبَّنَا لَوْلَا أَرْسَلْتَ إِلَيْنَا
رَسُولًا ۖ فَتَتَّبِعَ آيَاتِكَ وَنَكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ

और अगर ये नही होता कि जब उन पर उनकी अगली करतूतों की बदौलत कोई मुसीबत पड़ती तो बेसास्ता कह बैठते कि परवरदिगार तूने हमारे पास कोई पैगम्बर क्यों न भेजा कि हम तेरे हुक्मों पर चलते और ईमानदारों में होते (तो हम तुमको न भेजते)

فَلَمَّا جَاءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا ۖ لَوْلَا أُوتِيَ مِثْلَ مَا أُوتِيَ مُوسَىٰ ۖ أَوَلَمْ
يَكْفُرُوا ۖ بِمَا أُوتِيَ مُوسَىٰ مِنْ قَبْلُ ۖ قَالُوا ۖ سِحْرَانِ تَظَاهَرَا وَقَالُوا ۖ إِنَّا بِكُلِّ
كُفْرُونَ

मगर फिर जब हमारी बारगाह से (दीन) हक़ उनके पास पहुँचा तो कहने लगे जैसे (मौजिज़े) मूसा को अता हुए थे वैसे ही इस रसूल (मोहम्मद) को क्यों नही दिए गए क्या जो मौजिज़े इससे पहले मूसा को अता हुए थे उनसे इन लोगों ने इन्कार न किया था कुफ़्फ़ार तो ये भी कह गुज़रे कि ये दोनों के दोनों (तौरैत व कुरान) जादू हैं कि बाहम एक दूसरे के मददगार हो गए हैं

قُلْ فَأْتُوا ۖ بِكِتَابٍ ۖ مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ هُوَ أَهْدَىٰ مِنْهُمَا أَتَّبِعُهُ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ

और ये भी कह चुके कि हम एब के मुन्किर हैं (ऐ रसूल) तुम (इन लोगों से) कह दो कि अगर सच्चे हो तो खुदा की तरफ से एक ऐसी किताब जो इन दोनों से हिदायत में बेहतर हो ले आओ

50

فَإِنْ لَّمْ يَسْتَجِيبُوا ۙ لَكَ فَاعْلَمْ أَنَّمَا يَتَّبِعُونَ أَهْوَاءَهُمْ ۚ وَمَنْ أَضَلُّ مِمَّنِ اتَّبَعَ هَوَاهُ
بِغَيْرِ هُدًى مِّنَ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ

कि मैं भी उस पर चलूँ फिर अगर ये लोग (इस पर भी) न मानें तो समझ लो कि ये लोग बस अपनी हवा व हवस की पैरवी करते हैं और जो शख्स खुदा की हिदायत को छोड़ कर अपनी हवा व हवस की पैरवी करते हैं उससे ज्यादा गुमराह कौन होगा बेशक खुदा सरकश लोगों को मंज़िले मकसूद तक नहीं पहुँचाया करता

51

ۚ وَلَقَدْ وَصَّلْنَا لَهُمُ الْقَوْلَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ

और हम यकीनन लगातार (अपने एहकाम भेजकर) उनकी नसीहत करते रहे ताकि वह लोग नसीहत हासिल करें

52

الَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِهِ ۚ هُمْ بِهِ يُؤْمِنُونَ

जिन लोगों को हमने इससे पहले किताब अता की है वह उस (कुरान) पर ईमान लाते हैं

53

وَإِذَا يُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ قَالُوا ۚ ءَامَنَّا بِهِ ۚ إِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّنَا ۚ إِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلِهِ ۚ مُسْلِمِينَ

और जब उनके सामने ये पढ़ा जाता है तो बोल उठते हैं कि हम तो इस पर ईमान ला चुके बेशक ये ठीक है (और) हमारे परवरदिगार की तरफ से है हम तो इसको पहले ही मानते थे

54

أَوْ ۚ لَكَ يُوْتُونَ أَجْرَهُمْ مَرَّتَيْنِ بِمَا صَبَرُوا ۚ وَيَذَرُونَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ وَمِمَّا
رَزَقْنَاهُمْ يُنْفِقُونَ

यही वह लोग हैं जिन्हें (इनके आमाले खैर की) दोहरी जज़ा दी जाएगी-चूँकि उन लोगों ने सब्र किया और बदी को नेकी से दफ़ा करते हैं और जो कुछ हमने उन्हें अता किया है उसमें से (हमारी राह में) खर्च करते हैं

55

وَإِذَا سَمِعُوا ۙ أَلْفَوْا عَرَضُوا ۚ عَنْهُ وَقَالُوا ۚ لَنَا أَعْمَلْنَا وَلَكُمْ أَعْمَلُكُمْ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ
لَا نَبْتَغِي الْجَاهِلِينَ

और जब किसी से कोई बुरी बात सुनी तो उससे किनारा कश रहे और साफ कह दिया कि हमारे वास्ते हमारी कारगुज़ारियाँ हैं और तुम्हारे वास्ते तुम्हारी कारस्तानियाँ (बस दूर ही से) तुम्हें सलाम है हम जाहिलो (की सोहबत) के ख्वाहों नहीं

إِنَّكَ لَا تَهْدِي مَنْ أَحْبَبْتَ وَلَكِنَّ اللَّهَ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ ۚ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ

(ऐ रसूल) बेशक तुम जिसे चाहो मंज़िले मकसूद तक नहीं पहुँचा सकते मगर हाँ जिसे खुदा चाहे मंज़िल मकसूद तक पहुँचाए और वही हिदायत याफ़ता लोगों से खूब वाक्फ़ि है

وَقَالُوا ۚ إِنْ تَتَّبِعِ الْهُدَىٰ مَعَكَ نُتَخَطَّفُ مِنْ أَرْضِنَا ۚ أَوَلَمْ نُمَكِّنْ لَهُمْ حَرَمًا ءَامِنًا ۚ يُجَبَىٰ إِلَيْهِ ثَمَرَاتُ كُلِّ شَيْءٍ ۚ رِزْقًا ۚ مِنْ لَدُنَّا وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ

(ऐ रसूल) कुफ़ार (मक्का) तुमसे कहते हैं कि अगर हम तुम्हारे साथ दीन हक़ की पैरवी करें तो हम अपने मुल्क से उचक लिए जाएँ (ये क्या बकते हैं) क्या हमने उन्हें हरम (मक्का) में जहाँ हर तरह का अमन है जगह नहीं दी वहाँ हर किस्म के फल रोज़ी के वास्ते हमारी बारगाह से खिंचे चले जाते हैं मगर बहुतेरे लोग नहीं जाते

وَكَمْ أَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ ۚ بَطَرَتْ مَعِيشَتَهَا ۚ فَتِلْكَ مَسْكِنُهُمْ لَمْ تُسْكَنْ مِنْ ۚ بَعْدِهِمْ إِلَّا قَلِيلًا ۚ ا ۚ وَكُنَّا نَحْنُ الْوَارِثِينَ

और हमने तो बहुतेरी बस्तियाँ बरबाद कर दी जो अपनी मइशत (रोज़ी) में बहुत इतराहट से (ज़िन्दगी) बसर किया करती थीं- (तो देखो) ये उन ही के (उजड़े हुए) घर हैं जो उनके बाद फिर आबाद नहीं हुए मगर बहुत कम और (आखिर) हम ही उनके (माल व असबाब के) वारिस हुए

وَمَا كَانَ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرَىٰ حَتَّىٰ يَبْعَثَ فِي أُمِّهَا رَسُولًا ۚ ا ۚ يَتْلُوا ۚ عَلَيْهِمْ ءَايَاتِنَا ۚ وَمَا كُنَّا مُهْلِكِي الْقُرَىٰ إِلَّا وَأَهْلُهَا ظَالِمُونَ

और तुम्हारा परवरदिगार जब तक उन गाँव के सदर मक़ाम पर अपना पैग़म्बर न भेज ले और वह उनके सामने हमारी आयतें न पढ़ दे (उस वक्त तक) बस्तियों को बरबाद नहीं कर दिया करता-और हम तो बस्तियों को बरबाद करते ही नहीं जब तक वहाँ के लोग ज़ालिम न हों

وَمَا أُوتِيتُمْ مِّنْ شَيْءٍ ۚ فَمَتَّعُ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَزِينَتَهَا ۚ وَمَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ ۚ وَأَبْقَىٰ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ

और तुम लोगों को जो कुछ अता हुआ है तो दुनिया की (ज़रा सी) ज़िन्दगी का फ़ायदा और उसकी आराइश है और जो कुछ खुदा के पास है वह उससे कही बेहतर और पाएदार है तो क्या तुम इतना भी नहीं समझते

أَفَمَنْ وَعَدْنَاهُ وَعْدًا حَسَنًا ۖ فَهُوَ لَاقِيهِ كَمَنْ مَتَّعْنَاهُ مَتَّعًا فَهُوَ لَاقِيهِ ۚ ثُمَّ هُوَ يَوْمَ الْقِيَمَةِ مِنَ الْمُحْضَرِينَ

तो क्या वह शख्स जिससे हमने (बेहशत का) अच्छा वायदा किया है और वह उसे पाकर रहेगा उस शख्स के बराबर हो सकता है जिसे हमने दुनियावी ज़िन्दगी के (चन्द रोज़ा) फायदे अता किए हैं और फिर क़यामत के दिन (जवाब देही के वास्ते हमारे सामने) हाज़िर किए जाएँगे

وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ أَيْنَ شُرَكَائِيَ الَّذِينَ كُنْتُمْ تَزْعُمُونَ

और जिस दिन खुदा उन कुफ़्कार को पुकारेगा और पूछेगा कि जिनको तुम हमारा शरीक ख्याल करते थे वह (आज) कहाँ हैं (गरज़ वह शरीक भी बुलाए जाएँगे)

قَالَ الَّذِينَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ رَبَّنَا هَؤُلَاءِ الَّذِينَ أَغْوَيْنَا أَغْوَيْنَهُمْ كَمَا غَوَيْنَا ۖ تَبَرَّأْنَا إِلَيْكَ ۖ مَا كَانُوا إِلَّا نَا يَعْبُدُونَ

वह लोग जो हमारे अज़ाब के मुस्ताजिब हो चुके हैं कह देगे कि परवरदिगार यही वह लोग हैं जिन्हें हमने गुमराह किया था जिस तरह हम खुद गुमराह हुए उसी तरह हमने इनको गुमराह किया-अब हम तेरी बारगाह में (उनसे) दस्तबरदार होते हैं-ये लोग हमारी इबादत नहीं करते थे

وَقِيلَ ادْعُوا ۖ شُرَكَاءَكُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُمْ وَرَأَوُا الْعَذَابَ ۖ لَوْ أَنَّهُمْ كَانُوا يَهْتَدُونَ

और कहा जाएगा कि भला अपने उन शरीको को (जिन्हें तुम खुदा समझते थे) बुलाओ तो गरज़ वह लोग उन्हें बुलाएँगे तो वह उन्हें जवाब तक नहीं देंगे और (अपनी आँखों से) अज़ाब को देखेंगे काश ये लोग (दुनिया में) राह पर आए होते

وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ مَاذَا أَجَبْتُمُ الْمُرْسَلِينَ

और (वह दिन याद करो) जिस दिन खुदा लोगों को पुकार कर पूछेगा कि तुम लोगों ने पैग़म्बरों को (उनके समझाने पर) क्या जवाब दिया

فَعَمِيَتْ عَلَيْهِمُ الْأَنْبَاءُ يَوْمَئِذٍ ۚ فَهُمْ لَا يَتَسَاءَلُونَ

तब उस दिन उन्हें बातें न सूझ पड़ेगी (और) फिर बाहम एक दूसरे से पूछ भी न सकेंगे

فَأَمَّا مَنْ تَابَ وَءَامَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ۖ فَعَسَىٰ أَنْ يَكُونَ مِنَ الْمُفْلِحِينَ

मगर हाँ जिस शख्स ने तौबा कर ली और ईमान लाया और अच्छे अच्छे काम किए तो करीब है कि ये लोग अपनी मुरादें पाने वालों से होंगे

وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ وَيَخْتَارُ ۚ مَا كَانَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ ۚ سُبْحَنَ اللَّهِ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ

और तुम्हारा परवरदिगार जो चाहता है पैदा करता है और (जिसे चाहता है) मुन्तखिब करता है और ये इन्तिखाब लोगों के एख्तियार में नहीं है और जिस चीज़ को ये लोग खुदा का शरीक बनाते हैं उससे खुदा पाक और (कहीं) बरतर है

وَرَبُّكَ يَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُورُهُمْ وَمَا يُعْلِنُونَ

और (ऐ रसूल) ये लोग जो बातें अपने दिलों में छिपाते हैं और जो कुछ ज़ाहिर करते हैं तुम्हारा परवरदिगार खूब जानता है

وَهُوَ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ لَهُ الْحَمْدُ فِي الْأُولَىٰ وَالْآخِرَةِ ۚ وَلَهُ الْحُكْمُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ

और वही खुदा है उसके सिवा कोई क़ाबिले परसतिश नहीं दुनिया और आखिरत में उस की तारीफ़ है और उसकी हुकूमत है और तुम लोग (मरने के बाद) उसकी तरफ लौटाए जाओगे

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ جَعَلَ اللَّهُ عَلَيْكُمُ اللَّيْلَ سَرْمَدًا ۖ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَمَةِ مَنْ إِلَهٌ غَيْرُ اللَّهِ يَأْتِيكُمْ بِخِبْرَاءٍ ۚ أَفَلَا تَسْمَعُونَ

(ऐ रसूल इन लोगों से) कहो कि भला तुमने देखा कि अगर खुदा हमेशा के लिए क़यामत तक तुम्हारे सरो पर रात को छाए रहता तो अल्लाह के सिवा कौन खुदा है जो तुम्हारे पास रौशनी ले आता तो क्या तुम सुनते नहीं हो

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ جَعَلَ اللَّهُ عَلَيْكُمُ النَّهَارَ سَرْمَدًا إِلَى يَوْمِ الْقِيَمَةِ مَنْ إِلَهٌ غَيْرُ اللَّهِ يَأْتِيكُمْ بَلِيلٌ ۚ تَسْكُنُونَ فِيهِ ۚ أَفَلَا تُبْصِرُونَ

(ऐ रसूल उन से) कह दो कि भला तुमने देखा कि अगर खुदा क़यामत तक बराबर तुम्हारे सरो पर दिन किए रहता तो अल्लाह के सिवा कौन खुदा है जो तुम्हारे लिए रात को ले आता कि तुम लोग इसमें रात को आराम करो तो क्या तुम लोग (इतना भी) नहीं देखते

وَمِنْ رَحْمَتِهِ ۚ جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ لِتَسْكُنُوا ۚ فِيهِ وَلِتَبْتَغُوا ۚ مِنْ فَضْلِهِ ۚ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ

और उसने अपनी मेहरबानी से तुम्हारे वास्ते रात और दिन को बनाया ताकि तुम रात में आराम करो और दिन में उसके फज़ल व करम (रोज़ी) की तलाश करो और ताकि तुम लोग शुक्र करो

وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ أَيْنَ شُرَكَائِيَ الَّذِينَ كُنْتُمْ تَزْعُمُونَ

और (उस दिन को याद करो) जिस दिन वह उन्हें पुकार कर पूछेगा जिनको तुम लोग मेरा शरीक ख्याल करते थे वह (आज) कहाँ हैं

وَنَزَعْنَا مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا ۚ فَقُلْنَا هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ فَعَلِمُوا ۚ أَنْ الْحَقَّ لِلَّهِ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ

और हम हर एक उम्मत से एक गवाह (पैगम्बर) निकाले (सामने बुलाएँगे) फिर (उस दिन मुशरेकीन से) कहेंगे कि अपनी (बराअत की) दलील पेश करो तब उन्हें मालूम हो जाएगा कि हक़ खुदा ही की तरफ़ है और जो इफ़तेरा परवाज़ियाँ ये लोग किया करते थे सब उनसे ग़ायब हो जाएँगी

﴿۱﴾ إِنَّ قُرُونًا كَانَتْ مِنْ قَوْمِ مُوسَى فَبَغَى عَلَيْهِمْ ﴿۲﴾ وَءَاتَيْنَاهُ مِنَ الْكُنُوزِ مَا إِنَّ مَفَاتِحَهُ ﴿۳﴾ لَتَتَوَّأُّ بِالْعُصْبَةِ أُو۟لَی الْقُوَّةِ إِذْ قَالَ لَهُ ﴿۴﴾ قَوْمُهُ ﴿۵﴾ لَا تَفْرَحْ ﴿۶﴾ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْفَرِحِينَ

(नाशुक्री का एक किस्सा सुनो) मूसा की क्रौम से एक शख्स कारुन (नामी) था तो उसने उन पर सरकशी शुरू की और हमने उसको इस क्रूर खजाने अता किए थे कि उनकी कुन्जियाँ एक सकतदार जमाअत (की जामअत) को उठाना दूँ भर हो जाता था जब (एक बार) उसकी क्रौम ने उससे कहा कि (अपनी दौलत पर) इतरा मत क्योंकि खुदा इतराने वालों को दोस्त नहीं रखता

وَأَبْتَغَ فِيمَا ءَاتَكَ اللَّهُ الدَّارَ الْآخِرَةَ ﴿۱﴾ وَلَا تَنْسَ نَصِيبَكَ مِنَ الدُّنْيَا ﴿۲﴾ وَأَحْسِنَ كَمَا أَحْسَنَ اللَّهُ إِلَيْكَ ﴿۳﴾ وَلَا تَبْغِ الْفُسَادَ فِي الْأَرْضِ ﴿۴﴾ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِينَ

और जो कुछ खुदा ने तूझे दे रखा है उसमें आखिरत के घर की भी जुस्तजू कर और दुनिया से जिस क्रूर तेरा हिस्सा है मत भूल जा और जिस तरह खुदा ने तेरे साथ एहसान किया है तू भी औरों के साथ एहसान कर और रुए ज़मीन में फसाद का स्वाहा न हो-इसमें शक नहीं कि खुदा फ़साद करने वालों को दोस्त नहीं रखता

قَالَ إِنَّمَا أُوتِيتُهُ ﴿۱﴾ عَلَىٰ عِلْمٍ عِنْدِي ﴿۲﴾ أَوَلَمْ يَعْلَم أَنَّ اللَّهَ قَدْ أَهْلَكَ مِنْ قَبْلِهِ ﴿۳﴾ مِنَ الْقُرُونِ مَنْ هُوَ أَشَدُّ مِنْهُ قُوَّةً ﴿۴﴾ وَأَكْثَرُ جَمْعًا ﴿۵﴾ وَلَا يُسْأَلُ عَنْ ذُنُوبِهِمُ الْمُجْرِمُونَ

तो कारुन कहने लगा कि ये (माल व दौलत) तो मुझे अपने इल्म (कीमिया) की वजह से हासिल होता है क्या कारुन ने ये भी न ख्याल किया कि अल्लाह उसके पहले उन लोगों को हलाक कर चुका है जो उससे क़ुवत और हैसियत में कहीं बढ़ बढ़ के थे और गुनाहगारों से (उनकी सज़ा के वक्त) उनके गुनाहों की पूछताछ नहीं हुआ करती

فَخَرَجَ عَلَىٰ قَوْمِهِ ﴿۱﴾ فِي زِينَتِهِ ﴿۲﴾ قَالَ الَّذِينَ يُرِيدُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا يُلِيتَ لَنَا مِثْلَ مَا أُوتِيَ قُرُونٌ إِنَّهُ ﴿۳﴾ لَذُو حَظٍّ عَظِيمٍ ﴿۴﴾

गरज़ (एक दिन कारुन) अपनी क्रौम के सामने बड़ी आराइश और ठाठ के साथ निकला तो जो लोग दुनिया को (चन्द रोज़ा) ज़िन्दगी के तालिब थे (इस शान से देख कर) कहने लगे जो माल व दौलत कारुन को अता हुई है काश मेरे लिए भी होती इसमें शक नहीं कि कारुन बड़ा नसीब वर था

وَقَالَ الَّذِينَ أُوتُوا ۖ اَلْعِلْمَ وَيَلَكُمْ ثَوَابُ ٱللّٰهِ خَيْرٌ ۖ لِّمَن ءَامَنَ وَعَمِلَ صٰلِحًا ۖ ا وَلَا يُلَقَّيْهَا اِلَّا الصّٰبِرُونَ

और जिन लोगों को (हमारी बारगाह में) इल्म अता हुआ था कहने लगे तुम्हारा नास हो जाए (अरे) जो शख्स ईमान लाए और अच्छे काम करे उसके लिए तो खुदा का सवाब इससे कही बेहतर है और वह तो अब सब करने वालों के सिवा दूसरे नहीं पा सकते

فَخَسَفْنَا بِهٖ ۖ وَبَدَارِهٖ ٱلْأَرْضَ فَمَا كَانَ لَهُ ۖ مِنْ فِتْنَةٍ ۖ يَنْصُرُوْنَهٗ ۖ مِنْ دُونِ ٱللّٰهِ وَمَا كَانَ مِنَ ٱلْمُنْتَصِرِينَ

और हमने कारून और उसके घर बार को ज़मीन में धंसा दिया फिर खुदा के सिवा कोई जमाअत ऐसी न थी कि उसकी मदद करती और न खुद आप अपनी मदद आप कर सका

وَأَصْبَحَ ٱلَّذِينَ تَمَنَّوْا ۖ مَكَانَهُ ۖ بِٱلْأَمْسِ يَقُولُونَ وَيَكَأَنَّ ٱللّٰهَ يَبْسُطُ ٱلرِّزْقَ لِمَن يَشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ۖ وَيَقْدِرُ ۖ لَوْلَا أَن مِّنَ ٱللّٰهِ عَلَيْنَا لَخَسَفَ بِنَا ۖ وَيَكَأَنَّهُ ۖ لَا يُفْلِحُ ٱلْكَفَرُونَ

और जिन लोगों ने कल उसके जाह व मरतबे की तमन्ना की थी वह (आज ये तमाशा देखकर) कहने लगे अरे माज़अल्लाह ये तो खुदा ही अपने बन्दों से जिसकी रोज़ी चाहता है कुशादा कर देता है और जिसकी रोज़ी चाहता है तंग कर देता है और अगर (कहीं) खुदा हम पर मेहरबानी न करता (और इतना माल दे देता) तो उसकी तरह हमको भी ज़रूर धंसा देता-और माज़अल्लाह (सच है) हरगिज़ कुफ़ार अपनी मुरादें न पाएँगे

تِلْكَ ٱلدَّارُ ٱلْآخِرَةُ نَجْعُهَا لِلَّذِينَ لَا يُرِيدُونَ عُلُوًّا ۖ فِى ٱلْأَرْضِ وَلَا فَسَادًا ۖ ا ا وَٱلْعُقَبَةُ لِلْمُتَّقِينَ

ये आखिरत का घर तो हम उन्हीं लोगों के लिए खास कर देंगे जो रुए ज़मीन पर न सरकशी करना चाहते हैं और न फसाद-और (सच भी यूँ ही है कि) फिर अन्जाम तो परहेज़गारों ही का है

مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ [؟] خَيْرٌ [؟] مِنْهَا [؟] وَمَنْ جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَى الَّذِينَ عَمِلُوا [؟]
السَّيِّئَاتِ إِلَّا مَا كَانُوا [؟] يَعْمَلُونَ

जो शख्स नेकी करेगा तो उसके लिए उसे कहीं बेहतर बदला है औ जो बुरे काम करेगा तो वह याद रखे कि जिन लोगों ने बुराइयाँ की हैं उनका वही बदला हे जो दुनिया में करते रहे हैं

إِنَّ الَّذِي فَرَضَ عَلَيْكَ الْقُرْآنَ لَرَادُّكَ إِلَيَّ [؟] مَعَادٍ [؟] قُلْ رَبِّيَ أَعْلَمُ مَنْ جَاءَ بِالْهُدَى
وَمَنْ هُوَ فِي ضَلَالٍ [؟] مُبِينٍ [؟]

(ऐ रसूल) खुदा जिसने तुम पर कुरान नाज़िल किया ज़रूर ठिकाने तक पहुँचा देगा (ऐ रसूल) तुम कह दो कि कौन राह पर आया और कौन सरीही गुमराही में पड़ा रहा

وَمَا كُنْتَ تَرْجُو [؟] أَنْ يُلْقَىٰ إِلَيْكَ الْكِتَابُ إِلَّا رَحْمَةً [؟] مِنْ رَبِّكَ [؟] فَلَا تَكُونَنَّ
ظَهِيرًا [؟] لِلْكَافِرِينَ

इससे मेरा परवरदिगार खूब वाक़िफ है और तुमको तो ये उम्मीद न थी कि तुम्हारे पास खुदा की तरफ से किताब नाज़िल की जाएगी मगर तुम्हारे परवरदिगार की मेहरबानी से नाज़िल हुई तो तुम हरगिज़ काफ़िरों के पुश्त पनाह न बनना

وَلَا يَصُدُّكَ عَنْ ءَايَاتِ اللَّهِ بَعْدَ إِذْ أُنْزِلَتْ إِلَيْكَ [؟] وَأَدْعُ إِلَىٰ رَبِّكَ [؟] وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ
الْمُشْرِكِينَ

कहीं ऐसा न हो एहकामे खुदा वन्दी नाज़िल होने के बाद तुमको ये लोग उनकी तबलीग से रोक दें और तुम अपने परवरदिगार की तरफ (लोगों को) बुलाते जाओ और खबरदार मुशरेकीन से हरगिज़ न होना

وَلَا تَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا ءَاخَرَ [؟] لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ [؟] كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ إِلَّا وَجْهَهُ [؟] لَهُ
الْحُكْمُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ

और खुदा के सिवा किसी और माबूद की परसतिश न करना उसके सिवा कोई क़ाबिले परसतिश नहीं उसकी ज़ात के सिवा हर चीज़ फना होने वाली है उसकी हुकूमत है और तुम लोग उसकी तरफ़ (मरने के बाद) लौटाये जाओगे